Division Breeds Conflict: That's A Law	**विभाजन द्वंद का जनक है : यह नियम है।**
Why is there this division between man and man, between race and race, culture against culture? Why? Religions also have divided man, put man against man—the Hindus, the Muslims, the Christians, the Jews, and so on. This terrible desire to identify oneself with a group, with a flag, with a religious ritual, gives us the feeling that we have roots. *Krishnamurti to Himself,* 31 March 1983	आदमी और आदमी के बीच, जाति और जाति के बीच, संस्कृति और संस्कृति के विरुद्ध यह विभाजन क्यों है? क्यों? धर्मों ने भी आदमी को बांटा है, आदमी को आदमी के विरोध में खड़ा किया है जैसे हिंदू, मुसलमान, ईसाई, यहूदी आदि। स्वयं को किसी एक समूह के साथ, एक झंडे के साथ, एक धार्मिक परंपरा के साथ पहचान जोड़ने की भयावह इच्छा हमें यह एहसास देती है कि हमारा अपना कोई आधार है, अपनी जड़ें हैं। *कृष्णमूर्ति टू हिमसेल्फ, 31 मार्च 1983*
Each one of us wants to live in security. That is natural, that is an instinctive response to have food, clothes, and shelter. Every human being in the world, the most ignorant or the most sophisticated human being, wants security both outwardly and inwardly, to be safe. And this division, the national division, has made that security impossible; outwardly you have wars, you are being threatened by another country, by another ideology, and so you say you must protect yourself. This is what the politicians and all the so-called leaders are saying, because each one of us seeks security in division. We think we can be secure in the family; from the family the nation—the nation is only glorified tribalism. So we seek security in individuality, and we seek security in the family, in various forms of division. So one realizes, not theoretically, not intellectually, but *actually* in one's daily life that where there is division there must be conflict. That's a law, a natural law. If there is a division between a man and a woman, the husband and wife, and so on, there *must* be conflict between them. This is so. That is why in this country and in other countries there are so many divorces, each one wanting his own way, each one wanting to express himself fully, urged on by the	हममें से हर एक सुरक्षा में रहना चाहता है। यह स्वाभाविक है, यह भोजन, वस्त्र और आवास के लिए एक नैसर्गिक प्रतिक्रिया है। दुनिया का हर आदमी चाहे वो अति अनजान हो या सुसंस्कृत हो, आंतरिक और बाह्य दोनों ही तरह की सुरक्षा चाहता है, सुरक्षित होना चाहता है। और इस विभाजन, राष्ट्रीय विभाजन ने सुरक्षा को असंभव बना दिया है, बाहरी रूप से आप युद्ध करते हैं, आप दूसरे देशों, दूसरी विचारधाराओं द्वारा धमकाए जाते रहे हैं और इसीलिए आप कहते हैं कि आपके लिए अपनी सुरक्षा आवश्यक है। यही बात है जो राजनीतिज्ञ और सभी तथाकथित नेता कहते रहते हैं क्योंकि हममें से हर एक विभाजन में सुरक्षा चाहता है। हम सोचते हैं कि हम परिवार में ही सुरक्षित हो सकते हैं; फिर परिवार से राष्ट्र में--और राष्ट्र तो केवल एक जनजातीय महिमामंडन है, एक शानदार कबीलावाद है। इसीलिए हम विभाजन के विभिन्न स्वरूपों में सुरक्षा चाहते हैं, निजता में और परिवार में सुरक्षा चाहते हैं। इसीलिए लगता है, सैद्धांतिक रूप से नहीं, न ही बौद्धिक रूप से बल्कि वास्तविक रूप से अपने दैनिक जीवन में ऐसा महसूस होता है कि जहां विभाजन है, वहीं द्वंद्व भी होगा। यह एक नियम है, प्राकृतिक नियम। अगर एक स्त्री और पुरूष में विभाजन है, पति और पत्नी में विभाजन है तब वहां उन दोनों के बीच द्वंद्व होगा ही। ऐसा ही है। इसलिए इस देश में और अन्य देशों में भी बहुत तलाक होते हैं, हर कोई अपनी तरह से रहना चाहता है, हर कोई खुद को पूरी तरह से अभिव्यक्त करना चाहता है, और ऐसा मनोवैज्ञानिकों द्वारा भी ज़ोर दिया जाता है कि दमन मत करो, जो तुम चाहते हो वही करो..! *सॉन फ्रांसिसको वार्ता, 30 अप्रैल 1983*

psychologists who say, 'Don't restrain, do whatever you want…' *San Francisco Talk, 30 April 1983*	
If we look into our lives and observe relationship, we see it is a process of building resistance against another, a wall over which we look and observe the other; but we always retain the wall and remain behind it, whether it be a psychological wall, a material wall, an economic wall or a national wall, and we live enclosed because it is much more gratifying, we think it is much more secure. The world is so disruptive, there is so much sorrow, so much pain, war, destruction, misery that we want to escape and live within the walls of security of our own psychological being. That is exactly what is happening throughout the world: you remain in your isolation and stretch your hand over the wall, calling it nationalism, brotherhood or what you will, but actually sovereign governments, armies, continue. Still clinging to your own limitations, you think you can create world unity, world peace—which is impossible. So long as you have a frontier, whether national, economic, religious or social, it is an obvious fact that there cannot be peace in the world. *The First and Last Freedom,* Ch. 14	यदि हम अपने जीवन को देखें और अपने संबंधों का निरीक्षण करें तो हम पाएंगे कि वे परस्पर प्रतिरोध पैदा करने का सिलसिला बन गए हैं, मानो एक दीवार हो जिसके ऊपर से हम झांकते हों और एक दूसरे को देखते हों। उस दीवार को हम सदा सुरक्षित रखते हैं और स्वयं उसके पीछे रहते हैं। दीवार मानसिक भी हो सकती है, भौतिक भी, आर्थिक और राष्ट्रीय भी। जब तक हम अलगाव में, दीवार के पीछे रहते हैं, किसी के साथ संबंधित नहीं हो सकते। हम दायरे में कैद रहते हैं इसलिए कि वह हमें कहीं अधिक परितुष्ट करता है, हम सोचते हैं कि यह अधिक सुरक्षित है। यह संसार इतना विघटनकारी है, इसमें इतना दुख है, इतनी पीड़ा है, युद्ध है, बरबादी है, कष्ट है कि हम बच कर भागना चाहते हैं और अपने मनोवैज्ञानिक अस्तित्व की लक्ष्मण रेखा में सुरक्षित रहना चाहते हैं। वास्तव में हममें से अधिकांश के लिए संबंध अलगाव की एक प्रक्रिया है, और ज़ाहिर है, ऐसा संबंध ऐसे ही समाज का निर्माण करेगा जो अलगाव पैदा करता है। चारों ओर संसार में बिलकुल यही हो रहा है। आप अपने अलगाव में जीते हुए दीवार के ऊपर से ही हाथ आगे बढ़ा देते हैं और उसे राष्ट्रवाद, भाईचारा या ऐसा ही कोई नाम दे देते हैं, जबकि संप्रभुता-संपन्न सरकारें व सेनाएं बराबर बनी रहती हैं। अपनी संकीर्णताओं से चिपके रह कर आप सोचते हैं कि आप विश्व-एकता, विश्व-शांति स्थापित कर लेंगे--यह नामुमकिन है। जब तक आपने कोई सीमा बना रखी है, चाहे वह राष्ट्रीय हो या आर्थिक, धार्मिक हो या सामाजिक, विश्व में शांति हो ही नहीं सकती। *(प्रथम और अंतिम मुक्ति, अध्याय 14)*
We are concerned rightly with the outward change or reformation of the social structure with its injustice, wars, poverty, but we try to change it either through violence or the slow way of legislation. In the meantime there is poverty, war, hunger, and the mischief that exists between man and man. We seem totally to neglect paying attention to these vast accumulated clouds which man has been gathering for centuries upon centuries—sorrow, violence, hatred, and the artificial differences of religion and	हमारा सीधा संबंध बाहरी परिवर्तनों या सामाजिक ढांचे के सुधार, इसके अन्याय, युद्ध, गरीबी के साथ रहता है परंतु हम इसे या तो हिंसा के द्वारा या विधायिका की धीमी गति से बदलने की कोशिश करते हैं। इसी बीच आदमी और आदमी के बीच गरीबी, युद्ध, भूख और शैतानियां अस्तित्व में आती हैं। दुःख, हिंसा, घृणा और धर्म व जाति के बनावटी अंतर के बादल जिसे आदमी सदियों-सदियों से इकट्ठा करता आ रहा है, ऐसा मालूम पड़ता है कि हम इन विस्तृत एकत्रित बादलों पर ध्यान देने के प्रति लापरवाह हैं। जैसे समाज का बाहरी ढांचा रहता है वहां वे उसी तरह हैं--उसी तरह वास्तविक, उसी

race. They are there, as the outward structure of society is there: as real, as vital, as effective. We neglect these hidden accumulations and concentrate on the outward reformation. This division is perhaps the greatest cause of our decline. Meeting Life, *Ch. 7*	तरह शक्तिशाली और उसी तरह प्रभावशाली। हम इन छिपे संग्रहों के प्रति लापरवाह रहते हैं और बाह्य सुधार पर ध्यान केंद्रित करते हैं। यह विभाजन ही हमारी अवनति का शायद प्रमुख कारण है। मीटिंग लाइफ, अध्याय 7
The process of isolation is a process of the search for power; whether one is seeking power individually or for a racial or national group. After all, that is what each one wants, is it not? He wants a powerful position in which he can dominate, whether at home, in the office, or in a bureaucratic regime. Each one is seeking power, and in seeking power he will establish a society which is based on power, military, industrial, economic, and so on—which again is obvious. Is not the desire for power in its very nature isolating?	अलगाव की यह प्रक्रिया सत्ता की खोज की प्रक्रिया है, चाहे वह खोज कोई निजी ताकत के लिए कर रहा हो या किसी प्रजातीय अथवा राष्ट्रीय समूह के लिए, उसमें अलगाव का आना तय है; क्योंकि सत्ता की, पद की, आकांक्षा ही पृथकतावाद है। आखिरकार हममें से हर कोई यही तो चाहता है। घर में हो या दफ्तर में, या किसी नौकरशाही में, व्यक्ति शक्तिशाली पद चाहता है जहां से वह अधिकार जता सके। प्रत्येक व्यक्ति सत्ता खोज रहा है और सत्ता की खोज में वह एक ऐसे समाज को बना रहा है जो सत्ता--सेना, उद्योग, अर्थ आदि की सत्ता--पर आधारित होगा। तो क्या सत्ता पाने की आकांक्षा स्वयं अपने में ही अलगाव पैदा करने वाली नहीं है?
There is no such thing as living in isolation—no country, no people, no individual, can live in isolation; yet, because you are seeking power in so many different ways, you breed isolation. The nationalist is a curse because through his very nationalistic, patriotic spirit, he is creating a wall of isolation. So nationalism, which is a process of isolation, which is the outcome of the search for power, cannot bring about peace in the world. The man who is a nationalist and talks of brotherhood is telling a lie; he is living in a state of contradiction. *The First and Last Freedom,* Ch. 14	अलग-थलग जीने जैसा कुछ नहीं होता; कोई भी देश, जन-समुदाय, कोई भी व्यक्ति अलगाव में नहीं रह सकता; फिर भी आप तमाम तरीकों से सत्ता की खोज करते हुए अलगाव को पोसा करते हैं। राष्ट्रवादी व्यक्ति एक अभिशाप है क्योंकि अपने राष्ट्रवादी, राष्ट्रमोह के भाव के कारण ही वह दूसरों के विरोध में अलगाव की दीवार खड़ी कर लेता है। वह अपने देश के साथ इस तरह अपनी पहचान जोड़ लेता है कि उसके और अन्य के बीच एक दीवार खड़ी हो जाती है। जब आप किसी चीज़ के विरोध में दीवार बनाते हैं, तो होता क्या है? वह चीज़ लगातार आपकी दीवार से टकराती रहती है, संघर्षरत रहती है। जब आप किसी बात का प्रतिरोध करते हैं, वह प्रतिरोध ही इस बात का इशारा है कि आप किसी अन्य के साथ संघर्षरत हैं। अतः राष्ट्रवाद विभाजन की प्रक्रिया है, सत्ता की खोज का परिणाम है; वह विश्व में शांति नहीं ला सकता। वह व्यक्ति जो राष्ट्रवादी है और भाईचारे की बात करता है, झूठ बोल रहा है, अंतर्विरोध में जी रहा है। (प्रथम और अंतिम मुक्ति, अध्याय 14)
Until we dissolve those barriers, which are a self-deception, there can be no cooperation between you and me. Through identification with a group, with a	जब तक हम इन अवरोधों को, जो आत्म-छल हैं, विसर्जित नहीं कर देते, तब तक आपके और मेरे बीच कोई सहयोग संभव नहीं है। हम किसी समूह विशेष, विचार विशेष, राष्ट्र विशेष के साथ अपना

particular idea, with a particular country, we can never bring about cooperation. *The First and Last Freedom*, Ch. 18	तादात्म्य करके सहयोग कभी नहीं ला सकते। (प्रथम और अंतिम मुक्ति, अध्याय 18)
So we are asking: Is this confusion, misery, the result of the human brain seeking, at all levels of life, security? Is that the cause? One must have security physically—clothes, food, a roof over one's head; one must have that. But psychologically, inwardly, is there security at all? And is this chaos the cause of this idea, a concept that each one of us is a separate entity? Because we have never gone into the question that the brain of each one of us is the common brain of humanity. And this desire for security may have brought about this concept of the individual—me and you, we as a group against another group. Is that the cause? *Saanen Talk, 6 July 1980*	इसीलिए हम पूछ रहे हैं : क्या जीवन के सभी स्तरों पर मानव मस्तिष्क की सुरक्षा की चाहत ही इस अंतर्विरोध और दुःख के लिए ज़िम्मेदार है? क्या यही कारण है? व्यक्ति को भौतिक स्तर पर तो सुरक्षा चाहिए ही--कपड़े, भोजन, सिर के ऊपर एक छत तो आदमी के पास होनी ही चाहिए। परंतु मनोवैज्ञानिक रूप से, आंतरिक रूप से भी क्या वहां कोई सुरक्षा है? हमारी यह अवधारणा कि हममें से हर एक की सत्ता, पहचान अलग-अलग है, क्या यह विचार ही इस दुर्व्यवस्था का कारण है? क्योंकि हमने कभी भी इस प्रश्न पर नहीं सोचा कि हममें से हर एक का मस्तिष्क मानवता का एक सामूहिक मस्तिष्क है। और सुरक्षा की यह इच्छा ही व्यक्ति की इस अवधारणा ''मैं और तुम'' को ले आती है। क्या यही इसका कारण है? *ज़ानेन टाक, 6 जुलाई 1980*
These calm searching thoughts pierce to the roots of our problems. A profound and fresh approach to self-understanding and deeper insights into the meaning of personal freedom and mature love. Rollo May	ये शांति की खोज करने वाले विचार हमारी समस्याओं की जड़ों में पैठ बना लेते हैं। स्वयं को समझने के लिए गंभीरता की, ताजग़ी की जरूरत है तथा आत्म मुक्ति और परिपक्व प्रेम को समझने के लिए गहरी अंतर्दृष्टि की। ***रोलो में***